धाराएं

Presentation Created by:Vikas jain

गाथा 1 : मंगलाचरण

सिद्धं सुद्धं पणमिय जिणिंदवरणेमिचंदमकलंकं।
गुणरयणभूसणुदयं जीवस्स परूवणं वोच्छं॥

- जो सिद्ध, शुद्ध एवं अकलंक हैं एवं
- जिनके सदा गुणरूपी रत्नों के भूषणों का उदय रहता है,
- ऐसे श्री जिनेन्द्रवर नेमिचंद्र स्वामी को नमस्कार करके
- जीव की प्ररूपणा को कहूंगा ।

14 धाराएं

- सर्व धारा
- सम धारा
- विषम धारा
- कृति धारा
- अकृति धारा
- घन धारा
- अघन धारा
- कृति मातृक धारा
- अकृति मातृक धारा
- घन मातृक धारा
- अघन मातृक धारा
- द्विरूप वर्ग धारा
- द्विरूप घन धारा
- द्विरूप घनाघन धारा

सर्व धारा

- 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7 .... केवलज्ञान के अविभाग-प्रतिच्छेद पर्यंत

- सर्व स्थान
  - केवलज्ञान प्रमाण

सम धारा	विषम धारा
• सारी सम (even) संख्याएं • 2, 4, 6, 8, ….. केवलज्ञान के अविभाग-प्रतिच्छेद पर्यंत • सर्व स्थान – केवलज्ञान के अर्ध प्रमाण	• सारी विषम (odd) संख्याएं • 1, 3, 5, 7, 9, ……. केवलज्ञान के अविभाग-प्रतिच्छेद – 1 • सर्वस्थान – केवलज्ञान के अर्ध प्रमाण

जितनी भी जघन्य संख्याएं हैं वे सब सम रूप हैं और उत्कृष्ट संख्याएं विषम रूप हैं, एक केवलज्ञान को छोड़कर|

कृतिधारा	अकृति धारा
• जिसमें वर्गरूप संख्या विशेष प्राप्त होती है • 1, 4, 9, 16, 25, 36.... केवलज्ञान पर्यंत • सर्वस्थान – $\sqrt{\text{केवलज्ञान}}$	• जिसमे वर्ग रूप संख्या विशेष प्राप्त नहीं होती है • 2, 3, 5, 6, 7, 8, 10,..........केवलज्ञान – 1 • सर्वस्थान – केवलज्ञान – $\sqrt{\text{केवलज्ञान}}$

घनधारा	अघन धारा
• जिसमें घन रूप संख्या विशेष प्राप्त होती है	• जिसमें घनरूप संख्या विशेष प्राप्त नहीं होती
• 1, 8, 27, 64,...... केवलज्ञान का आसन्नघन	• 2, 3, 4, 5, 6, 7, 9.... केवलज्ञानपर्यंत
• सर्व स्थान – केवलज्ञान के आसन्नघनमूल प्रमाण	• सर्व स्थान – केवलज्ञान – घनधारा के स्थान

कृति मातृक धारा	अकृति मातृक धारा
• जो संख्याएं वर्ग को उत्पन्न करने में समर्थ होती हैं वे संख्याएं इस धारा में पाई जाती हैं • 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7…. $\sqrt{\text{केवलज्ञान}}$ पर्यंत • सर्वस्थान – $\sqrt{\text{केवलज्ञान}}$	• जिन संख्याओं का वर्ग करने पर वर्ग संख्या का प्रमाण केवलज्ञान से आगे निकल जाता है वे संख्याएं इस धारा में पाई जाती हैं • $\sqrt{\text{केवलज्ञान}}$ +1, $\sqrt{\text{केवलज्ञान}}$ +2 • सर्वस्थान – केवलज्ञान – $\sqrt{\text{केवलज्ञान}}$

घन मातृक धारा

- जो संख्याएं घन को उत्पन्न करने में समर्थ होती हैं वे इस धारा में पाई जाती हैं
- 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7.... केवलज्ञान का आसन्नघनमूल
- सर्वस्थान
  - केवलज्ञान के आसन्नघनमूल प्रमाण

अघन मातृक धारा

- जिन संख्याओं का घन करने पर घन संख्या का प्रमाण केवलज्ञान से आगे निकल जाता है वे इस धारा में पाई जाती हैं
- केवलज्ञान के आसन्नघन के प्रथम घनमूल+1, केवलज्ञान के आसन्नघन के प्रथम घनमूल +2
- सर्वस्थान
  - केवलज्ञान – केवलज्ञान का आसन्नघनमूल

द्विरूप वर्ग धारा

- 2 के वर्ग से प्रारंभ कर पूर्व-पूर्व संख्या का वर्ग जिस धारा में पाया जाता है वह द्विरूप वर्ग धारा है ।
- द्विरूप = 2
- वर्ग = 2 × 2

  = $(2)^2$ यह प्रारंभ स्थान है।

द्विरूपवर्ग धारा के स्थान

स्थान	संख्या	कैसे आई?	अन्य रूप
1	4	2 x 2	2^{2}
2	16	4 x 4	2^{4}
3	256	16 x 16	2^{8}
4	65536 (पण्णट्ठि)	256 x 256	2^{16}
5	4294967296 (बादाल)	65536 x 65536	2^{32}
6	18446744073709551616 (एकट्ठि)	42= x 42=	2^{64}

अर्द्धच्छेद

- विवक्षित राशि का जितनी बार आधा-आधा होता है, उतना उस राशि के अर्द्धच्छेद होते हैं। जैसे
- 4 के छेद = $\frac{4}{2}$ = 2 , $\frac{2}{2}$ = 1 याने 2 छेद
- 16 के छेद = 16, 8, 4, 2, 1 याने 4 छेद
- 64 के छेद = 64, 32, 16, 8, 4, 2, 1 याने 6 छेद
- 256 के छेद = 256, 128, 64, 32, 16, 8, 4, 2, 1 याने 8 छेद

2	256
2	128
2	64
2	32
2	16
2	8
2	4
2	2
	1

अर्द्धच्छेद (2 की घात से)

- जितनी विवक्षित राशि की 2 की घात है, उतने छेद उस राशि के होते हैं।
- जैसे– 4=2^2, तो 4 के छेद 2
- 256 = 2^8, तो 256 के छेद 8
- 65536 = 2^{16}, तो 65536 के छेद 16

अर्द्धच्छेद (गणित सूत्र से)

- विवक्षित राशि का $\log_2$ निकालने पर उस राशि के अर्धच्छेद होते हैं।
- जैसे – 4 के छेद $= \log_2 4 = 2$
- 256 के छेद $= \log_2 256 = 8$
- 65536 के छेद $= \log_2 65536 = 16$

वर्गशलाका

- 2 के वर्ग से लगाकर जितनी बार वर्ग करने पर विवक्षित राशि उत्पन्न होती है, उतनी ही उस राशि की वर्गशलाका होती है।
- जैसे 4 की वर्गशलाका = 1, क्योंकि
  - $2 \times 2 = 4$
- 16 की वर्गशलाका = 2, क्योंकि
  - $2 \times 2 = 4$
  - $4 \times 4 = 16$
- 256 की वर्गशलाका = 3, क्योंकि
  - $2 \times 2 = 4$
  - $4 \times 4 = 16$
  - $16 \times 16 = 256$

वर्गशलाका

- जिस राशि के छेद निकाले हैं, उसी की वर्गशलाका निकालने के लिए उस राशि के छेद निकालना
- जितने छेद होंगे, उतनी ही मूल राशि की वर्गशलाका होती है।
- अर्थात् मूल राशि के छेद के छेद = मूल राशि की वर्गशलाका
- जैसे

4 के छेद 2	2 के छेद 1	4 संख्या की वर्गशलाका = 1
256 के छेद 8	8 के छेद 3	256 संख्या की वर्गशलाका = 3
65536 के छेद 16	16 के छेद 4	65536 संख्या की वर्गशलाका = 4

वर्गशलाका (गणित सूत्र से)

- विवक्षित राशि का $\log_2$ का $\log_2$ निकालने पर उस राशि की वर्गशलाका होती है।
- जैसे – 4 की वर्गशलाका = $\log_2(\log_2 4)$ = $\log_2 2 = 1$
- 256 की वर्गशलाका = $\log_2(\log_2 256)$ = $\log_2 8$ = 3
- 65536 की वर्गशलाका = $\log_2(\log_2 65536)$ = $\log_2 16$ = 4

द्विरूपवर्ग धारा की वर्गशलाका, छेद, एवं स्थान

वर्गशलाका	अर्धच्छेद	संख्या
1	2	4
2	4	16
3	8	256
4	16	65536 (पणट्ठी)
5	32	4294967296 (बादाल)
6	64	18446744073709551616 (इकट्ठि)

द्विरूप वर्ग धारा के सर्व स्थान

संख्या	विशेष
4	
16	
256	
65=	
42=	
18=	
⋮	संख्यात स्थान जाने पर
जघन्य परित असंख्यात की वर्गशलाका	
⋮	संख्यात स्थान जाने पर
जघन्य परित असंख्यात के छेद	
⋮	संख्यात स्थान जाने पर
जघन्य परित असंख्यात का वर्गमूल	एक स्थान जाने पर
जघन्य परित असंख्यात	

संख्या	विशेष
⋮	संख्यात स्थान जाने पर (जघन्य परित असंख्यात के छेद मात्र स्थान)
जघन्य युक्त असंख्यात (आवली)	एक स्थान जाने पर
जघन्य असंख्यातासंख्यात (प्रतरावली)	
⋮	असंख्यात स्थान जाने पर
पल्य की वर्गशलाका	
⋮	असंख्यात स्थान जाने पर
पल्य के छेद	
⋮	असंख्यात स्थान जाने पर
$\sqrt{\text{पल्य}}$	एक स्थान जाने पर
पल्य	
⋮	असंख्यात स्थान जाने पर (पल्य की वर्गशलाका मात्र स्थान)
सूच्यंगुल	एक स्थान जाने पर
प्रतरांगुल	

संख्या	विशेष
⋮	असंख्यात स्थान जाने पर
$\sqrt[3]{\text{जगत्श्रेणी}}$	
⋮	असंख्यात स्थान जाने पर
जघन्य परित अनन्त वर्गशलाका	
⋮	असंख्यात स्थान जाने पर
जघन्य परित अनन्त के छेद	
⋮	असंख्यात स्थान जाने पर
$\sqrt{\text{जघन्य परित अनन्त}}$	एक स्थान जाने पर
जघन्य परित अनन्त	
⋮	असंख्यात स्थान जाने पर
जघन्य युक्तानन्त	एक स्थान जाने पर
जघन्य अनन्तानन्त	
⋮	अनंत-अनंत स्थान जाने पर क्रम से जीव राशि की वर्गशलाका, अर्धच्छेद, वर्गमूल। फिर एक स्थान जाने पर

संख्या	विशेष
जीव राशि	
⋮	अनंत-अनंत स्थान जाने पर क्रम से पुद्गल राशि की वर्गशलाका, अर्धच्छेद, वर्गमूल। फिर एक स्थान जाने पर
पुद्गल	
⋮	अनंत-अनंत स्थान जाने पर क्रम से 3 कालों के समयों की वर्गशलाका, अर्धच्छेद, वर्गमूल। फिर एक स्थान जाने पर
3 काल के समय	
⋮	अनंत-अनंत स्थान जाने पर क्रम से आकाश प्रदेशों की वर्गशलाका, अर्धच्छेद, वर्गमूल। फिर एक स्थान जाने पर
श्रेणी-रूप आकाश के प्रदेश (1 D)	एक स्थान जाने पर
प्रतराकाश के प्रदेश (2 D)	आकाश प्रदेशों की वर्ग रूप संख्या (लम्बाई x चौड़ाई)
⋮	अनंत-अनंत स्थान जाने पर क्रम से धर्म-अधर्म के अगुरुलघु गुण के अविभाग प्रतिच्छेद की वर्गशलाका, अर्धच्छेद, वर्गमूल। फिर एक स्थान जाने पर

संख्या	विशेष
धर्म-अधर्म के अगुरुलघु गुण के अविभाग प्रतिच्छेद	
⋮	अनंत-अनंत स्थान जाने पर क्रम से एक जीव के अगुरुलघु गुण के अविभागप्रतिच्छेद की वर्गशलाका, अर्धच्छेद, वर्गमूल। फिर एक स्थान जाने पर
एक जीव के अगुरुलघु गुण के अविभागप्रतिच्छेद	
⋮	अनंत-अनंत स्थान जाने पर क्रम से जघन्य ज्ञान के अविभागप्रतिच्छेद की वर्गशलाका, अर्धच्छेद, वर्गमूल। फिर एक स्थान जाने पर
जघन्य ज्ञान के अविभागप्रतिच्छेद	
⋮	अनंत-अनंत स्थान जाने पर क्रम से जघन्य क्षायिक लब्धि के अविभागप्रतिच्छेद की वर्गशलाका, अर्धच्छेद, वर्गमूल। फिर एक स्थान जाने पर
जघन्य क्षायिक लब्धि के अविभागप्रतिच्छेद	
⋮	अनंत स्थान जाने पर
केवलज्ञान की वर्गशलाका	
⋮	अनंत स्थान जाने पर

संख्या	विशेष
केवलज्ञान के अर्धच्छेद	
⋮	अनंत स्थान जाने पर
$\sqrt[8]{\text{केवलज्ञान}}$ (केवलज्ञान का तृतीय वर्गमूल)	एक स्थान जाने पर
$\sqrt[4]{\text{केवलज्ञान}}$ (केवलज्ञान का द्वितीय वर्गमूल)	एक स्थान जाने पर
$\sqrt{\text{केवलज्ञान}}$	एक स्थान जाने पर
केवलज्ञान	यही द्विरूप वर्गधारा का अंतिम स्थान है

(देय)$^{\text{विरलन}}$ राशियों के अर्धच्छेद निकालने का सूत्र:

  - देय राशि के अर्धच्छेद × विरलन राशि

- जघन्य युक्त असंख्यात देय-विरलन के विधान से आता है । अतः जघन्य युक्त असंख्यात के अर्धच्छेद =
  - जघन्य परित असंख्यात के अर्धच्छेद × जघन्य परित असंख्यात

(देय)$^{\text{विरलन}}$ राशियों की वर्गशलाका निकालने का सूत्र:

– देय राशि की वर्ग शलाका + विरलन राशि के अर्धच्छेद

- जघन्य युक्त असंख्यात देय-विरलन के विधान से आता है । अतः जघन्य युक्त असंख्यात की वर्गशलाका =
  – जघन्य परित असंख्यात की वर्गशलाका + जघन्य परित असंख्यात के अर्धच्छेद

द्विरूप वर्गधारा के नियम

- जघन्य युक्त असंख्यात की वर्गशलाका और छेद इस धारा में क्यों नहीं आये?
  - जो राशि देय-विरलन के विधान से उत्पन्न होती है, उस राशि की वर्गशलाका एवं अर्धच्छेद उस धारा में उत्पन्न नहीं होते हैं। यह नियम तीनों धाराओं के लिये है। अतः जघन्य युक्त असंख्यात की वर्गशलाका एवं अर्धच्छेद द्विरूप वर्गधारा में नहीं आते।
  - इसी प्रकार अन्य भी देय-विरलन वाली राशियों के लिये जानना ।

- जघन्य परित असंख्यात के कितने स्थान आगे जाने पर जघन्य युक्त असंख्यात आयेगा?
  - जघन्य परित असंख्यात से जघन्य परित असंख्यात के छेद प्रमाण स्थान आगे जाने पर जघन्य युक्त असंख्यात आयेगा । क्योंकि जो राशि देय-विरलन के विधान से उत्पन्न होती है वह देय राशि से विरलन राशि के अर्धच्छेद मात्र स्थान ऊपर जाने पर पैदा होती है ।
  - इसी प्रकार अन्य भी देय-विरलन वाली राशियों के लिये जानना ।

द्विरूप घनधारा

- 2 के घन से प्रारंभ कर पूर्व-पूर्व संख्या का वर्ग जिस धारा में पाया जाता है वह द्विरूप घनधारा है
- द्विरूप = 2
- इसका घन = 2 × 2 × 2

  $= 2^3 = 8$ यह इस धारा का पहला स्थान है।

द्विरूप घनधारा के स्थान

स्थान	संख्या	कैसे आई?	अन्य रूप
1	8	2 x 2 x 2	2^{3}
2	64	8 x 8	2^{6}
3	4096	64 x 64	2^{12}
4	4096^{2}	4096 x 4096	2^{24}
5	65536^{3}	65536 x 65536 x 65536	2^{48}
6	$42=^{3}$	42= x 42= x 42=	2^{96}

visit www.jainkosh.org for granth, notes, audio & video

द्विरूप घनधारा की वर्गशलाका, छेद, एवं संख्या

वर्गशला का	अर्धच्छेद	संख्या
1	3	8
2	6	64
3	12	4096
4	24	4096^2
5	48	65536^3
6	96	$42=^3$

द्विरूप घनधारा के सर्व स्थान

संख्या	विशेष
8	
64	
4096	
4096^2	
65536^3	
$42=^3$	
⋮	संख्यात स्थान जाने पर
जघन्य परित असंख्यात^3	
⋮	संख्यात स्थान जाने पर
जघन्य युक्त असंख्यात^3	एक स्थान जाने पर
प्रतरावली^{3}	

संख्या	विशेष
⋮	असंख्यात स्थान जाने पर
(पल्य की वर्गशलाका)^3	
⋮	असंख्यात स्थान जाने पर
(पल्य के छेद)^3	
⋮	असंख्यात स्थान जाने पर
($\sqrt{\text{पल्य}}$)^3	एक स्थान जाने पर
(पल्य)^3	
⋮	असंख्यात स्थान जाने पर
घनांगुल	
⋮	असंख्यात स्थान जाने पर
जगत्श्रेणी	एक स्थान जाने पर
जगत्प्रतर	
⋮	अनंत-अनंत स्थान जाने पर क्रम से जीव राशि की वर्गशलाका का घन, अर्धच्छेद का घन, वर्गमूल का घन। फिर एक स्थान जाने पर

संख्या	विशेष
(जीव राशि)^3	
⋮	अनंत-अनंत स्थान जाने पर क्रम से पुद्गल राशि की वर्गशलाका का घन, अर्धच्छेद का घन, वर्गमूल का घन। फिर एक स्थान जाने पर
(पुद्गल राशि)^3	
⋮	अनंत-अनंत स्थान जाने पर क्रम से 3 कालों के समयों की वर्गशलाका का घन, अर्धच्छेद का घन, वर्गमूल का घन। फिर एक स्थान जाने पर
(3 काल के समय)^3	
⋮	अनंत-अनंत स्थान जाने पर क्रम से आकाश प्रदेशों की वर्गशलाका का घन, अर्धच्छेद का घन, वर्गमूल का घन। फिर एक स्थान जाने पर
सर्व आकाश के प्रदेश (3 D)	एक स्थान जाने पर
⋮	अनंतानंत स्थान जाने पर
$\left(\sqrt[4]{\text{केवलज्ञान}}\right)^3$	केवलज्ञान के द्वितीय वर्गमूल का घन। यही इस धारा का अंतिम स्थान है

विशेष

1. जो-जो राशियाँ द्विरूप वर्गधारा में आयी हैं, उन-उनका घन इस द्विरूप घनधारा में पाया जाता है |

- जैसे जघन्य परित असंख्यात द्विरूप वर्गधारा में है, तो उसका घन द्विरूप घनधारा में पाया है |

2. द्विरूप घनधारा की विवक्षित राशि के छेद उसी स्थान की द्विरूप वर्गधारा के छेद से तीन गुने होते हैं |

- जैसे 64 संख्या जो घनधारा में है, इसके छेद वर्गधारा के इसी स्थान के छेद 2 से तीन गुने याने 6 होते हैं |

द्विरूप घनाघनधारा

- 2 के घन के घन से प्रारंभ कर पूर्व-पूर्व संख्या का वर्ग जिस धारा में पाया जाता है वह द्विरूप घनाघनधारा है|
- द्विरूप = 2
- इसका घन = $2 \times 2 \times 2 = 2^3 = 8$
- इसका भी घन = $8 \times 8 \times 8 = 8^3 = 512$ यह पहला स्थान है।

द्विरूप घनाघनधारा के स्थान

स्थान	संख्या	कैसे आई?	अन्य रूप
1	512	2 x 2 x 2 x 2 x 2 x 2 x 2 x 2 x 2	2^{9}
2	$262144 = 4^{9}$	512 x 512	2^{18}
3	$68719476736 = 16^{9}$	262144 x 262144	2^{36}
4	256^{9}	$16^{9} \times 16^{9}$	2^{72}
5	$65 =^{9}$	$256^{9} \times 256^{9}$	2^{144}
6	$42=^{9}$	$65 =^{9} \times 65 =^{9}$	2^{288}

द्विरूप घनाघनधारा की वर्गशलाका, छेद, एवं संख्या

वर्गशलाका	अर्धच्छेद	संख्या
1	9	512
2	18	$262144 = 4^9$
3	36	$68719476736 = 16^9$
4	72	256^9
5	144	$65 =^9$
6	288	$42=^9$

द्विरूप घनाघनधारा के सर्व स्थान

संख्या	विशेष
512	
$262144 = 4^9$	
$68719476736 = 16^9$	
256^9	
⋮	असंख्यात स्थान जाने पर
जगत्घन	
⋮	असंख्यात स्थान जाने पर
अग्निकायिक जीव की गुणकार शलाका	
⋮	असंख्यात-असंख्यात स्थान जाने पर क्रम से अग्निकायिक जीव राशि की वर्गशलाका, अर्धच्छेद, वर्गमूल । फिर एक स्थान जाने पर
अग्निकायिक जीव राशि	

संख्या	विशेष
⋮	असंख्यात-असंख्यात स्थान जाने पर क्रम से अग्निकायिक की स्थिति की वर्गशलाका, अर्धच्छेद, वर्गमूल । फिर एक स्थान जाने पर
अग्निकायिक की स्थिति	
⋮	असंख्यात-असंख्यात स्थान जाने पर क्रम से अवधिज्ञान संबंधी उत्कृष्ट क्षेत्र की वर्गशलाका, अर्धच्छेद, वर्गमूल । फिर एक स्थान जाने पर
अवधिज्ञान संबंधी उत्कृष्ट क्षेत्र	
⋮	असंख्यात-असंख्यात स्थान जाने पर क्रम से स्थितिबंध अध्यवसाय स्थानों की वर्गशलाका, अर्धच्छेद, वर्गमूल । फिर एक स्थान जाने पर
सर्व स्थितिबंध अध्यवसाय स्थान	
⋮	असंख्यात-असंख्यात स्थान जाने पर क्रम से अनुभाग बंध अध्यवसाय स्थानों की वर्गशलाका, अर्धच्छेद, वर्गमूल । फिर एक स्थान जाने पर
सर्व अनुभाग बंध अध्यवसाय स्थान	

संख्या	विशेष
⋮	असंख्यात-असंख्यात स्थान जाने पर क्रम से निगोद शरीर की उत्कृष्ट संख्या की वर्गशलाका, अर्धच्छेद, वर्गमूल । फिर एक स्थान जाने पर
निगोद शरीर की उत्कृष्ट संख्या	
⋮	असंख्यात-असंख्यात स्थान जाने पर क्रम से निगोद काय स्थिति की वर्गशलाका, अर्धच्छेद, वर्गमूल । फिर एक स्थान जाने पर
निगोद काय स्थिति	
⋮	असंख्यात-असंख्यात स्थान जाने पर क्रम से उत्कृष्ट योगस्थान के अविभागप्रतिच्छेदों की वर्गशलाका, अर्धच्छेद, वर्गमूल । फिर एक स्थान जाने पर
उत्कृष्ट योगस्थान के अविभागप्रतिच्छेद	एक स्थान जाने पर
⋮	अनंतानंत स्थान जाने पर
$\left(\sqrt[16]{\text{केवलज्ञान}}\right)^{9}$	केवलज्ञान के चतुर्थ वर्गमूल का घन का घन । यही इस धारा का अंतिम स्थान है

विशेष

1. जो-जो राशियाँ द्विरूप वर्गधारा में आयी हैं, उनके घन का घन इस द्विरूप घनाघनधारा में पाया जाता है |
2. जो-जो राशियाँ द्विरूप घनधारा में आयी हैं, उनका घन इस द्विरूप घनाघनधारा में पाया जाता है |

- जैसे जगत्श्रेणी घनधारा में आती है, उसका घन याने लोक घनाघनधारा में आता है |

3. द्विरूप घनाघनधारा की विवक्षित राशि के छेद उसी स्थान की द्विरूप वर्गधारा के छेद से 9 गुने होते हैं |
4. द्विरूप घनाघनधारा की विवक्षित राशि के छेद उसी स्थान की द्विरूप घनधारा के छेद से 3 गुने होते हैं |

धाराओं की स्थान संख्या

द्विरूप वर्गधारा के सर्व स्थानों की संख्या =

- केवलज्ञान की वर्गशलाका प्रमाण

द्विरूप घनधारा के सर्व स्थानों की संख्या =

- द्विरूप वर्गधारा के सर्व स्थान – 1

द्विरूप घनाघनधारा के सर्व स्थानों की संख्या =

- द्विरूप वर्गधारा के सर्व स्थान – 3

धाराओं की स्थान संख्या

- ग्रन्थ में द्विरूप घनधारा के सर्व स्थानों की संख्या = (द्विरूप वर्गधारा के सर्व स्थान – 2) दी है । ऐसा प्रतीत होता है कि द्विरूप घनधारा के सभी स्थानों को एक ऊपर ले लिया गया है जिससे घनधारा में वर्गधारा का हर समानांतर स्थान वर्गधारा की संख्या का घन कहला सके । ऐसा ग्रन्थ में कहा भी है कि 'हर वर्गधारा की संख्या का घनधारा में उसी स्थान पर घन होता है', जबकि वह एक स्थान आगे जाकर होता है । इस प्रकार घनधारा को एक स्थान पीछे लेने पर उसके सर्व स्थानों की संख्या वर्गधारा के स्थानों से 2 कम हो जाती है और यदि इस प्रकार एक स्थान पीछे नहीं लिया जावे, तो वह वर्गधारा के स्थानों से 1 ही कम होती है, 2 नहीं ।
- इसी प्रकार घनाघनधारा में भी समझना ।

पारिभाषिक शब्द

अग्निकायिक की स्थिति

- कोई जीव अन्य काय (पृथ्वी, जल आदि) से आकर अग्निकायिक में उत्पन्न हुआ, फिर पुनः जितने अधिकतम काल तक अग्निकायिक में ही लगातार उत्पन्न होवे, अन्य काय में नहीं ।

अवधिज्ञान संबंधी उत्कृष्ट क्षेत्र

- सर्वावधि ज्ञान को जितना क्षेत्र जानने की शक्ति है, उसके प्रदेशों का प्रमाण है ।

निगोद काय स्थिति

- निगोद शरीररूप परिणमे पुद्गल स्कंध उत्कृष्टरूप से जितने काल तक निगोद शरीरपने को नहीं छोड़ते।

visit www.jainkosh.org for granth, notes, audio & video

- Reference : श्री त्रिलोकसारजी, श्री गोम्मटसारजी जीवकांड

- Presentation created by : Vikas jain
- Get Presentation online from: www.jainkosh.org
- For correction / feedback / suggestions, please contact

  - vikasnd@gmail.com
  - ☎: 0731-2410880